

पुनं तस्या तस्या मवस्थायां भुंज्या जन्म निजन्म नि ॥ १३ ॥ नपि तुः कर्म एव
 त्रः पिता ~~पुत्र~~ पुत्र कर्मणा स्वयं कृते स्य यं कृते न गच्छति स्वयं वक्ष्यते
 कर्मणा ॥ १४ ॥ न कश्चिद् ~~कश्चिद्~~ शिक्कस्य रित्यु त्रपि ता माता न कस्य
 रित् ॥ अस्य यं प्राप्ते न कर्म पिता माते तित तस्य तं ॥ १५ ॥ न क
 श्चिदस्य रि कृतेः कर्तुं दुःखं सुखा निवा करोती वा कर्न कर्म
 मो मो लोकस्य के वलं ॥ १६ ॥ पुराणी ता वया विद्या यस्तै दे तै नृप
 न ॥ पुरा कृतानि कार्यानि स्रग्मेधा वंति धा वतः ॥ १७ ॥

अथानुसंधानम्
 ॥ १ ॥

215

विदुः सा मा न त क शि क शिं दु व्यस्य भा न नं । उ न प्रे भा न नं
 क शि क शि नो भ य भा न नं ॥ १७ ॥ अ नु चं त री ए वा व वि शं
 तु म स्ती त ते धा वं तु च दि राः सर्वा ना द त भु प त भ त ॥ १८ ॥ किं
 क रो ति न रः प्रा नः प्रे र्थ भा नः स्व क र्म भिः । प्रा ये न हि
 म नु ष्या नां पु डि क र्म नु सा रि णि ॥ १९ ॥ न के व लं म नु ष्ये षु
 दे व दे वे षु वि प्र भुः । सं ति मि त्रं ध ना ध्य क्षो र्म प्रा व र णो ह रः
 ॥ २० ॥ अ व स्यं भा वि भा वा नां प्र ति कारो भ वे द्य दि । त हा दुः खे

न ति ष्ये यूर्न ल रां म यु धि ष्ठि रा ॥ २१ ॥ इ ह य क्त रु ते क र्म
 त स्य र त्रा वि भु य ते सि क्त म त्त स्य व द्यो य क्तं शा खा सु द
 स्य ते ॥ २२ ॥ क र्म त्त म ल तं क र्म त दे व मि ति क थ्य
 ते त स्मात्पु रु ष का रे ण य त्तं कू र्यो दित त्रि त ॥ २३ ॥
 यो य म र्थं प्रार्थ यते य द्द र्थं य त ते व यः ॥ अ व स्यं त द सा प्रो ति
 न ये द्वा तो नि व र्ते ते ॥ २४ ॥ न दे व मि ति र्प चि त्त्य त्त ते जे दु भोग
 मा त्त नः । अ नु क म्मे न क लो त्रि ले भ्यः प्रा पु म र्ह ति ॥ २५ ॥

५ द्यः शैशाह सं धे यै वलं वृष्णिः पराक्रम
निताम ६ द्यो वि सै कि तः २०॥ मनुष्यः स मासाद्य स्वर्गमोक्ष
प्राप्तिं क्रीडयेत् साधयत्येकं समस्त साध्यते विरं ॥ २१॥
देवासुराणां सर्वेषां मानुष्यमति दुर्लभं तत्प्राप्य तथा कू
र्माग्रगण्यै रूक्यथा ॥ २२॥ धर्मो धर्मो कामो क्षाणां यस्यै कोपिन
विद्यते । अजोर्गस्तानस्ये वनिरथं तस्य जीवन् ॥ २३॥ यस्मिन् जीवति
जीवन्ति विपश्चिन्त्ये वाचः । स फलं जीवितं तस्य आत्मा धर्मो न

जीवति २३॥ वाचा सरस्वती यस्य भार्या रुपवती सती । स
धर्मी स्यात्तव ती यस्य स फलं तस्य जीवन् २४॥ स जीवति गु
णो यस्य यस्य धर्मः स जीवति गुणधर्मविहीनस्य निष्फ
लं स तु जीवितं ॥ २५॥ जीवन् पंचरात्रेण ज्ञानं विज्ञेयं निम
लं किं फलं वर्षलक्षं यदि ज्ञानं विवर्जितं ॥ २६॥ जीवन्तो
पि मृताः पंचव्यासेन परिकीर्तिताः । हरिद्रा व्याधितो मरुः
प्रवासी परसेवकः ॥ २७॥ सर्वं वरं संदुखं सर्वं मात्मवसं

खं ॥ स त द्वि धा स माये न सत ए सुख दुःख यो ॥ इह ॥ सुख
 स्थानं त इह ॥ सुखं ॥ स्थानं त इह सुख ॥ सुख दुःख मनु ध्या एण स
 व ॥ सुख त ते ॥ ३१ ॥ गुणिभिः सह सं प कः ॥ सं द्वि तैः सह सं
 क था ॥ कृतिभिः सह मित्रं क वो णो ना व सी द ती ॥ ३२ ॥
 गुणाः सर्वत्र ह्येवं ते वि त्वं शौ निरर्थ कः ॥ व सु दे वं प रि
 त्प स वा सु दे वं न तो जनः ॥ ३३ ॥ न हि त न्म निरु पे ष त्वं ये व
 त्वं गु ण तो भ व ते ॥ गु ण कु र्व त्व मा प्रा नि दु षं द वि व
 जे य धा ॥

सि धानुनः गा यि का धिं व्र सि त धा नु व र त्वा को नि को णो ॥
 न मो वा गि भू रा यः ॥ ३४ ॥ न न सि ष्ठ प्र इ इ उ उ न न सि ल
 दे यै यो यो सं स्रुः ॥



रं प्ररु गुरु न मुक्ति देव न संसये ॥ ७ ॥ आत्मा का रे च मुखा निः ॥ ८ ॥
 वन कार मरः ॥ ९ ॥ आत्मा ते र गुरु ग्या नः ॥ १० ॥ तारि तं भव सा ग रे ॥ ११ ॥ आत्मा तु त
 र परि स म सं ग रे विष य न रः ॥ १२ ॥ आत्मा ते र गुरु ग्या नं भा ग्य नि नो व प स्य
 तिः ॥ १३ ॥ श्री नार द उवाच ॥ को वा क रो ति क र्म रः ॥ को वा मु क्ति रु क र्म नः ॥
 को वा लि प्यं ति वां ॥ पा निः ॥ को वा दाय रा य नः ॥ १४ ॥ श्री भग व नो वा च ॥ प रि
 तिः क र्म त क र्म इ ति या म क्त मे व रः ॥ म नो लि प्यं ति वां ॥ पा नि ग्या नं र मु क्ति मे
 व रः ॥ १५ ॥ म नो लि प्यं ति योः ॥ पा निः ॥ म नो मो दाय रा य नः ॥ म नो लि प्यं त उ म न
 नो न क र्म मे व रः ॥ १६ ॥ गुरु भक्ति सदा लि नं प्र वं आत्मा र सिं त नं ॥ १७ ॥ य क
 व दाय रा य आ स्वा द ते मि ना मे व रः ॥ १८ ॥ त स्ये स्वा द न ज्ञा ना मि सा दे व

भु व ने त्र य ॥ पू न र्ति तं पू ण र्ति तं पु न र्ति तं म नो लि प्यं त र मे व रः ॥ १९ ॥
 पु न र्ति तं ग नं भ क्ति र्ति तं ल भ ते न राः ॥ म नो लि प्यं त र मे व रः ॥ २० ॥ य क भा वे र
 सिं त नं ॥ २१ ॥ गुरु भक्ति सदा लि नं ॥ स न्नि मु क्ति र त भ वे त् ॥ २२ ॥ ल नि न क र्म
 ज्ञा न कि स्था र मे व रः ॥ २३ ॥ नार द उवाच ॥ कं का रे वे स्म वा क र्म ॥ द द भ क्ति स
 नि ष प्ति ॥ द र्म नारा य न र द र्म नं मो दाय रा य नः ॥ २४ ॥ क र्म मि थ मि मे दे व
 सा दं क र्म के स व ॥ मि थ र्म इ ति या स र्म ते कि स्वा द म ने क पा ॥ २५ ॥ श्री भग व
 नो उवाच ॥ प्र वं क र्म क र्म रि था मि पु न र्ति तं म नो लि प्यं त र मे व रः ॥ २६ ॥ गुरु ना को स क र्म
 मी आ त्र का ले पु म्म दो दां ॥ २७ ॥ आ न न क र्म क र्म र्ति तं ॥ व त्र ले प स ति थ ते ॥
 य न रा ना न मे र्ति तं ॥ स म क्ता प ये मे व रः ॥ २८ ॥ म म भ क्ति वि दु न स्य ॥ त स्य ग ती

न विधुते ॥ आत्मा प्र न दो मा कत्वा त दे स्म वा पर मं प दं ॥ २१ ॥ क द्यु जे ल य द
न त्रे त्रे ता य ध्या न मे व रः ॥ द्वा प र स्तो म ह्ये ग्ये स क लो रा न स्य के न लं ॥ २२ ॥ क द्यु
दा द स व र्णं ता यं सु सु प्रे व रः ॥ द्वा प र पं र व र्णो नि क लि षु ते मो दो मे व रः ॥ २३ ॥
प्र कृ ति सु री द्रि मा ध्ये स मं क त स र्क र दः ॥ त स्य ज न नि प्र स्न ता स्त ग्वा णि पं र त
भ व रः ॥ २४ ॥ आ व कु ल वि स्तृ ता मा ग्वा णि य त्र न ज्ञा प्र तेः ॥ ता व द्भु मं ती सं सा रे
पि त्र पि ए न का छ ति ॥ २५ ॥ अ दि द्र ति पु रु षे स्ते पि त्र पि ए न ग चि ते ॥ त स्य पि त्र
रु द्दे ति कौ क पि ए न भ द्रे ते ॥ २६ ॥ अ दि मं त्र वि य त क णि ता रं ति क ल कौ त रः ॥ मे स्य
३ त्वा र मं त्र ए न शे ना रा प्र नो भ वे त् ॥ २७ ॥ अ ए भ्यो वा मे दो भ्यो र भ म ते पि त म
राः ॥ गुरु प्र त्र म दि प्रा ष षु ते भ व व ध न मः ॥ २८ ॥ दि द्वा मा ग मं त्र त्वा र वि त
रो त स्य शो र्व तः ॥ अ स्म क ले वे स्म वा र धं ने स्य कु ल दि प कः ॥ २९ ॥ अ स्म पु त्रा दि

वि त स प स्वि दि त मे व रः ॥ ३० ॥ अ भ्यो कु ल ता रं ति क न्या पु त्रं र व क्त ते ॥ ३१ ॥ अ स्म
स स्थि तो ग भ ति स्य दे ह्य प वि त्र कः ॥ ना रि का मा थ पु रु षे षु त्र क न्या स्त ॥ ३२ ॥
पै ॥ ३३ ॥ इ स्म र रु रि दि द्मा र थ वा ता रि उ ये ते ॥ ३४ ॥ अ दि यो प्रा षु गुरु प्र सा
दि तो भ ये त् ॥ ३५ ॥ आ दि द्यो जा य त म लु प्र म म्मो नि स तं व रः ॥ ३६ ॥ अ दि स्य मा ग
प्रो तं स प र व्र द्वा स व स्म ति ॥ ३७ ॥ व ध नं गु र स्तो पि रं गुरु र र न भ म्मो त
॥ ३८ ॥ दे व ता र भ्य ते दे दि गुरु प्र ता क त भ वे त् ॥ ३९ ॥ ज न्म ज न्म पु नै श मे त स्य
सि दि र्भ व ल भ्ये ते ॥ ज न्म ज न्म शे म्म पा पं ति स्या नि व नि व त्ते ॥ ४० ॥ गुरु
दे व प्र स दे न त स्य मो दो र वि धु ते ॥ त त्मा त गुरु क र्त्तव्यो र वि ज्ञा गुरु

नमो भगवते ॥ ३० ॥ नारद उवाच ॥ योगिन तज्जगत्सर्वं ब्रह्म ने वै सर्वं स्तोत्रं यो
दिशामं गुरुकृतं स्तौक ध्यामि गुरुं भो हतमः ॥ ३१ ॥ श्री भगवा नोक्तवाच
नमो योगिन तज्जगत्सर्वं ब्रह्म ने वै सर्वं स्तोत्रं यो
गुरुं तज्जगत्सर्वं ॥ ३२ ॥ श्राद्धं प्रदेत वेत्ति मे वै स देव धनसहस्रं ॥ पश्येत्स्थाने
गुरुं वी प्रदिश्या गुरुं तज्जगत्सर्वं ॥ ४० ॥ संन्यासं विना दिश्या याति कथा
वते नरः ॥ गतिं गुरुं न कर्तव्यां कर्तव्यां न सं सं ॥ ४१ ॥ उभयो नरके प्र
ति गुरुं सिद्धे रशते ॥ पापान् नश्य कथ्यते नौ कासार भारध्या ये ते ॥ ४२ ॥
गतिं गुरुं न कर्तव्यां नातारंति न तारिते ॥ शुक्ल कायं ध्या नौ कायं तथ
गुरुं तज्जगत्सर्वं ॥ ४३ ॥ गुरुं स्थाने स्था गुरुं कर्तव्यं भुव पारं न गच्छति ॥ नर

पापां एतं त्वारं भुव पारं गच्छति ॥ ४४ ॥ न पके भुव तपे पं क का टि करं
ना कृते ॥ निर्मलं तल स्या सं सं सारं पापनाशनं ॥ ४५ ॥ न न्या कर्त
विनिवा निव्या तन तल वलं विना ॥ न संन्यासं विना दिश्या सं सं सत्ये च
सा सरद ॥ ४६ ॥ निंदते न देशा खाणि विष्णु संन्यासं निंदते ॥ वस्य व
पसद आनि विष्णुं जायेत तं प्रगा ॥ ४७ ॥ संन्यासं अशुभं जीनां सं सा
रं प्रतना सनं ॥ निंदको नरके त्याति स न सुक पुन पुनः ॥ ४८ ॥ संन्या
सं भगवते दिशत्ये स न्याय नारद ॥ विभा चारि कुल मि नृपा ज्ञात क
न कृमा न्येते ॥ ४९ ॥ नारद उवाच ॥ प्रकृति कथं तं सा दृष्टि या भु
ती मे नर ॥ भानो सि व्यंति क मी मि त स्य भुती की क म मे ये ती ॥ ५० ॥

श्री भगवान् नमो वासु॥ मनमा ना पस्ति रूपं नूनं श्रुं सुमि वसु॥ तव महि
 सं महि नं सर्व काये प्रमुये ते॥ ५१॥ कन विर्तं प न वि त क क त क म उ
 मा शुभं॥ आत्मानं राक्ष मा क त्वा त व स्त व प रं प दः॥ ५२॥ शुभ प वि त्रं
 यदि रां नो मं ह स्तं प वि त्रं यदि रा न पु न्यः॥ यदि प वि त्रं यदि त्रि थं क
 पि पा न प वि त्रं यदि वृ ष्णा ता नः॥ ५३॥ इति श्री भगवान् नारद मुनि उवाच
 लये सु नं सु म म॥ राम श्री शके १०१४ सम्यत् १८४ टी॥ नै स के
 जितं सुभ म सु क्षो वा आ सु क्षो वा म म नो न दि य ते ग॥



ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

गुरुं श्यामोऽपि नमस्कृत्य तान् नमस्कृत्य
तान् पश्यन् नमस्कृत्य तान् पश्यन् नमस्कृत्य
गुरुं श्यामोऽपि नमस्कृत्य तान् नमस्कृत्य
गुरुं श्यामोऽपि नमस्कृत्य तान् नमस्कृत्य
गुरुं श्यामोऽपि नमस्कृत्य तान् नमस्कृत्य
गुरुं श्यामोऽपि नमस्कृत्य तान् नमस्कृत्य

पलकनय २५ मलपंमसमनपनमा। मोः ग्रुको हरे
ना। प्रचलपसमनपनकननाः तो नवनयः चानम
लं। ग्रोनप्रनती पुलमुलं। ग्रोपहं। लपमुलं। म
ग्रोनवाकेमः मो। पु। मुलं। ग्रोप्रिं। मो। न्रीं। मु
इ। नमसो। कानः। ६। ॥ ग्रुनी। मीही। ६। ॥ न। म। ६। ॥

ह्येताः पञ्च भूतानि कनकः पञ्चसुपतः च लज्जाकान्
 मानचञ्च्रीधनमानि ताभिः वीर्यतन्त्रतनीद्वितीया तीर्थी
 तफेटीप्रज्ञामंभुलवीक्ष्यः पञ्चक्रीती चञ्चुतांभ
 क्यलीलीं हुतेन पञ्चमक्रमेन सप्तहस्तहस्त
 कर्मलेनी ह्येताः पञ्चमश्रीवेन सप्तलोकाः इतिः आश्री
 तमानन्ताः ह्येताः मानः नमनी पञ्चमः क्यलीनी

मला चापे गो नित ध्यानं

दे वेन्द्र मे ला म न्दो र म क रं म् को ना रू ना वी यं ह नं
तु ते रं वे र ना बु ज ले न व । सर सु ती न म न्दु वं
व लं दे का म रू ती नी वा आ लं रं का रि स्वा शा सि धि
मे ग तु त मे रा रा । १४ ।



आ ग णे सा ये न मो ॥ ॥ अ ध र ल्पि धर्म सं वा दे लि ख्य ते ॥ ॥ आ सार
ये न मो ॥ ॥ ॥ ये तो स ति त तो ल ह्मी य ती ल ह्मी त तो ह रि ॥ ॥ य तो
रि त तो ध र्मो ॥ ॥ य तो ध र्म त तो ज्ये ये ॥ य स्व भ न्या को द्र ॥ स लं ग
मा को ठा वं ल ह्मी व द्धि र ॥ ज्ञा ता ल ह्मी वा स ग र्दि तां तां क ल्म व ॥ स्व
मे र्म त ग र्द म् ॥ ज्ञा तां क ल्म व द्धि र ॥ तां ता ध र्म व द्धि र ॥ ज्ञा तां ध
मे र्म त तां स र स लो ता ॥ ध र्म उ वा च ॥ ध र्म ते ल ह्मी ये वि ति
ग सा ॥ ज्ञा तां स र स लो ता ॥ ध र्म ते ल ह्मी ये वि ति
ज्ञा तां स र स लो ता ॥ ध र्म ते ल ह्मी ये वि ति
ज्ञा तां स र स लो ता ॥ ध र्म ते ल ह्मी ये वि ति
ज्ञा तां स र स लो ता ॥ ध र्म ते ल ह्मी ये वि ति

येति भर्गु रत्नम् । धियो निती जया ॥ लक्ष्मी उवाच ॥ तव लक्ष्मी
लेक हन भयो ॥ देव प्रति धिम विती गरि वृ मा उ ला ॥ सु सु सु
स ॥ म क न वा सं दि नु न दि नु स्वा ला का हा त द ॥ का ह्य म न्या
दे वि स्त्री जन को अ ल ह्य ए म क ह द ॥ सु नु ह वो स ॥ जो अ स्त्री
अ सु सु चि द ॥ जो अ स्त्री सं स ल द ॥ जो अ स्त्री क र्क सा के ल ह द
प्रि म द ॥ जो अ स्त्री अ ति स वा नि द ॥ जो अ स्त्री अ ति म ली
नि द ॥ जो अ स्त्री अ ति आ हा रि द ॥ जो अ स्त्री अ ति का म न
या द ॥ अ ति धो क स्वा स नि का अ ल ह्य ए ह न ॥ क व न अ ल ह्य
ए भ न्या ष का मा को थु कः ना क सि गा न जि तां मां हां द्य सि र

प न्या घ र न व द्य इ न्या ॥ क सि गर कु ना का नि ला ई रा व न्या
वो वि मा ठे क रि मा को स स्वा र न ग न्या ॥ रु ठो सो व न हे न्य
सि ज सो भा व भ मा कि ॥ आ ग प्र ये र भ मा कि ॥ लु गा म प्रे ल
भ मा कि ॥ ह वा के स कि ता री र स्वा कि ॥ प रि वा र स्वा मि
क न न द्य ई क न आ कु वा न्या ॥ पा ना पी ना को स्व दे न जां
न्या ॥ य स्तो सो भा व भ मा कि स्वा स्त्री का घ र म व स्ती न ल ह्य
ले आ जा ग रि भ व न स्त्री स्वा स्त्री का घ र भु त प्रे त वा स
ग द्द न ॥ या स प ति तां हां द्य भु त प्रे त जा ई जां द्य ॥ ये ती

अस्त्री जन ले राती दिन कमा पावनी ॥ अतः संपत्ति बहुते
 आया पति आया को मातै देमिंदु ॥ तसौ तता या को लाडि
 आया पावि फरा उंदु ॥ तसै धन अति राई जांदु ॥ भूत वे
 पाई जांदु ॥ ॥ इति श्री लक्ष्मी धर्म शंवादे प्रथमोऽध्यायः ॥
 श्री लक्ष्मी वाचः ॥ ॥ लक्ष्मी ते धर्मयि आज्ञा गरि न ॥ अथ सास्त्रि
 को लक्ष्मी अकहं दुः सं नु ह वर ॥ जो अस्त्रि शित ल वर नदुः
 जो अस्त्रि दि मा वं ति दुः ॥ जो अस्त्रि अय स पनि दुः ॥ जो अस्त्रि अ
 स्य आ ला रि दुः ॥ जो अस्त्रि सि त ल वं ति दुः ॥ जो अस्त्रि सु रि वं ति दुः

जो अस्त्रि अय का मन मा दुः ॥ जो अस्त्रि कल न रा न्या दुः ॥ जो अ
 स्त्रि सु घ र दुः ॥ जो अस्त्रि द मा वं ति दुः ॥ इति थोक स्त्रि जन को
 लक्ष्मी ए हो ॥ स्त्रि जन ले श क प ह रा त दुः भं हा उ ठ नु ॥ वा
 नि र का नुः सका अस्मान ग नुः न सका हा त मु ष कु नु ॥ ल
 रि दु नु ॥ भि त र वा नि र क सि ग र व ज र नु ॥ ध र रि प नु ॥
 क वा ल को र नु सिं कु र ल उ नु ॥ त व दे वा र्ण को ला मा ग रि
 ग नु ॥ व वा र क न अ द्वा उ नु ॥ सि का व नु ॥ त व आ क ना स्त्रि
 परि

को सेना गर्त ॥ वस्त्र कृत्ति ज आ ग म ये ल न राष नु ॥ सुधरुद नु
धर को फ साई न राष नु ॥ धर क सि ग र लाई राष नु ॥ वैले व
रि नार स्वा मि क न पुत्रा व नु ॥ पद्मि आ कृ लेषा नु ॥ आ कृ नु स्वा
मि देव ता ज सो मा नि व स्तु ॥ शक्ति स्त्री न न का धर म धु ॥ सा हा
क स्तो ॥ अने क दू व्यः ॥ अने क धर्मो ॥ अने क अन्न पानिः ॥ अने
क रुत ॥ अने क शिप ॥ अने क पु न्य ॥ अने क गु न हो ला ॥ मित्र
वादि भ रि पु न हो ला ॥ धन द्वे प्र कै ले दु न्या द्वे नः ॥ इति श्री धर्मो सं
वा दे दि ति यो ध्या ये ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥ अथ धर्म धि या ज्ञा गदि भ

अनः ॥ तन ति मि आ ज्ञा ह व स्तु ॥ धर्मो वाच ॥ तन धर्म या ज्ञा
गर्ह भ याः ॥ हे लक्ष्मी पाप पुण्य का क था हा क हं दुः ॥ सं न ह व
स्तु ॥ सु न त मो ई चा भ योः ॥ एक न र भा हा स्त्रि जन या कृ ना पुरु
ष क न रि स ले हे या का पाप ले न कृ ति शु ख भ योः ॥ एका बुरुष
का रि स ले हे या का पाप ले टे ला मो भु ष भ यो ॥ ॥ पु र्ष क न न ग
नि अ की त र स ग या का पाप ले ला ती त न भ भ योः ॥ स्वा मि परि
वार क न नु धा ई वा या का पाप ले प्र भ द्वे वा या को पाप ले योः

पुनर्जन्म न भ्रातृरुद्धम्या किकुर्कनिको जन्म हं हू ॥ पुनर्जन्म न भ्रा
तृ आकूना स्वाभि कन कुरिन्न ठानिद्वेया का पापले ज्ञां ज्ञा
तितांतां दुषि लो लिव जेदु षड् ॥ ॥ इति लक्ष्मी चर्म संवादे
तति प्रो ध्यायेत् ॥ श्री चर्मो वासः ॥ चर्म भं हूः तिलक्ष्मी चर्म
का कथा सा सनुत वोर ॥ मक हं हूः ॥ स्त्रिजन का आकूना स्वाभि
देवि अर्को प्राथिनः ॥ समस्त देव ताः ॥ समस्त त्री थः ॥ समस्त रा
नः ॥ समस्त पुन्य ॥ सर्व धर्मो स्वाभि भक्ति हूः ॥ तस कारणा स्त्रिजन
ले स्वाभि को सेवा वदुतै गरिग नुः ॥ दिति प्रो ग्धर्मो स्त्रिजन

कनतांतां देवि अर्को धर्मो प्राथिनः ॥ स्त्रिजन ले कुरिन्न ठानि
विरान पुरुष कन ह्येया का पापले म हा व जे वा प क हूः ॥
इति ज्ञानिक न स्वाभि को सेवा वदुतै गरिग नुः ॥ शसु पुन्य ले
इति लोक मांतां पनिलक्ष्मी व डि भा ग्य मानि ज म ये भाति होः
पुत्र वंति ॥ शो भा वंति ॥ धर्म वंति ॥ गुण वंति ॥ ज स वंति ॥
धर्म ॥ ऐति संतुक्त भई रह्यु हूः ॥ ॥ इति ठानिक न स्वाभि को
सेवा वदुतै गरिग नुः ॥ भक्ती गुरुः ॥ ऐति श्री लक्ष्मी चर्म संवा
दे संतु ध्यायेत् ॥ श्री चर्मो वासः ॥ ॥ पुनर्जन्म पुन वोर

का कथा ला ॥ धर्म लेत श्री धि आता गया ॥ हेल लक्ष्मी को दि म नु ध
कि ते लि गत ना व स्र सै मे त रु वा ई का दा न दे ले श्री कृष्ण नि
कन सु दत्त गरि कं न्या दा सु दे ला ॥ यदि विधी का धर्म ले स्वर्ग ला
भ ले ला ॥ को दि म नु ध रु वा ई धि के दि दा न लि कन क न्या दा न दे
ला यदि पा प ले स सु रा ले पु न र्ज म क वा दा ति र्नु प ली ॥ के पी ले सा
त त म न क मा रि भै सेवा ग र्नु प ली ॥ को दि म नु ध यो कथा ला
जा नि ज वा ई को प्र ति पा ल ग रे दू त वा म्नि ए स द्द अ भो ज न ॥ जो
स त दा न दि या को पु न्य पा व ला ॥ य ति ता नि ध र्म ग र्नु यो प र ता

न पा व ला पं डी त हो ला ॥ ॥ य ति श्री लक्ष्मी ध र्म सं वा दे पं र मो ध्या
ये ॥ ॥ ॥ ध र्मो ना स ॥ हेल लक्ष्मी पु न र्ज म्नि ए मा ता गया को पा
प यदि ज म्नि मा हा दे या ला प्र दू ॥ लो ल सो या को पा प ले इ प
र म हो ला ॥ का सो रो या को पा प ले व दि रे हं दू ॥ भ मि सो या को
पा प ले त ल स हो ला हं दू ॥ यो धि न स री या का पा प ले ला तो ज
म हो ला ॥ क पा स री या का पा प ले से तो क दा हो ला ॥ दे व गु
रु नि दा गया को पा प ले गु ण वि द्या ता नि स दा रो जि हो ला ॥
म नु ध को नि दा गया का पा प ले दा रि दि हो ला ॥ अ जो य अ

